मध्यप्रदेश शासन

मध्यप्रदेश स्थापना दिवस

1 नवंबर 2012

शिवराज सिंह चौहान

मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

का संदेश

प्रिय बहनों एवं भाइयों,

मध्यप्रदेश के स्थापना दिवस की आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएँ। आज मध्यप्रदेश अपनी स्थापना के 56 बसंत देखने के बाद 57वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है।

हम हर्षित और गर्वित हैं, महाकवि कालिदास, आचार्य वराह मिहिर की विरासत पर, सतपुड़ा और विंध्याचल जैसे हिमालय से प्राचीन पहाड़ों पर, जीवन रेखा नर्मदा नदी पर, चंदेरी और बाग के हस्तशिल्प पर, कान्हा और बाँधवगढ़ पर, खजुराहो और साँची जैसी विश्व धरोहरों पर, पन्ना के हीरे पर और सबसे बढ़कर विविधवर्णी जनजातीय समूहों पर। ऐसी जन वत्सला धरती को हम सभी प्रणाम करते हैं।

साढ़े पाँच दशक के दौरान भारत के इस हृदय प्रदेश ने अनेक उतार-चढ़ाव देखे। अकूत प्राकृतिक सम्पदा और विकास की संभावनाएँ भरपूर होने के बाद भी यह संभावनाओं का प्रदेश ही कहा जा रहा था। बीते 9 वर्ष में प्रदेश संभावनाशील राज्य की पहचान से कहीं आगे बढ़कर संभावनाओं को साकार करने वाले प्रदेश के रूप में उभरा है।

इस अवधि में सड़क, बिजली, पानी सहित अधोसंरचना विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्रदेश के खाते में दर्ज हुई हैं। अब उद्योगपतियों और निवेशकों को मध्यप्रदेश में आना फायदेमंद नजर आने लगा है। वे पूरे भरोसे के साथ यहाँ निवेश कर रहे हैं।

मध्यप्रदेश आज एक मजबूत अर्थ-व्यवस्था वाला प्रदेश है। ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना के 7.6 प्रतिशत आर्थिक विकास के लक्ष्य को दो साल पहले ही पीछे छोड़कर योजना के अंत में 10.20 प्रतिशत विकास दर हासिल की गयी। इससे पहले नवमीं पंचवर्षीय योजना में यह दर 8.49 प्रतिशत थी। इसी तरह ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना में औसत कृषि विकास दर 9.04 प्रतिशत रही, जो एक शानदार उपलब्धि है। इस दौरान अखिल भारतीय कृषि विकास दर महज 3.3 प्रतिशत रही।

मध्यप्रदेश ने वर्ष 2011-12 में लगभग 12 प्रतिशत आर्थिक विकास दर और 18 प्रतिशत कृषि विकास दर हासिल कर अपनी आर्थिक मजबूती का परिचय दिया है। बीते पाँच वर्ष में प्रदेश की संचयी औद्योगिक विकास दर 9.82 प्रतिशत रही, जबकि अखिल भारतीय दर 6.83 रही। वर्ष 2011-12 में प्रदेश की औद्योगिक विकास दर अखिल भारतीय 3.95 की तुलना में 8.05 प्रतिशत रही।

जीएसडीपी में सेकण्डरी सेक्टर (खनिज, विनिर्माण, ऊर्जा, निर्माण) का योगदान बढ़कर 33 प्रतिशत हो गया। निर्माण क्षेत्र में प्रदेश 16.69 प्रतिशत की दर से बढ़ा।

वर्ष 2011-12 में मध्यप्रदेश ने आर्थिक विकास दर में गुजरात, महाराष्ट्र, हरियाणा, पश्चिम बंगाल, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, पंजाब और तमिलनाडु जैसे दिग्गज प्रदेशों को पीछे छोड़ा। कृषि प्रधान अर्थ-व्यवस्था वाले इस प्रदेश में कृषि-आधार में मजबूती के फलस्वरूप पिछले 5 वर्ष में विकास दर कभी नकारात्मक नहीं रही।

प्रदेश में सिंचाई सुविधा का अभूतपूर्व विकास कृषि में मजबूती का आधार है। प्रदेश में पिछले नौ वर्षों में अभूतपूर्व गति से सिंचाई सुविधाओं का निर्माण और विस्तार किया गया है। प्रदेश कृषि उत्पादन में नये कीर्तिमान रच रहा है। बीते रबी मौसम में प्रदेश में 127 लाख टन का बम्पर गेहूँ उत्पादन हुआ। सिर्फ 32 प्रतिशत सिंचित क्षेत्र से हमने इतनी बड़ी उपलब्धि पायी है।

अधोसंरचना विकास के क्षेत्र में लगभग 70 हजार किलोमीटर लंबी सड़कों का निर्माण और सुधार किया गया। बिजली क्षेत्र में बहुत तेजी से काम हो रहा है। प्रदेश की विद्युत उत्पादन क्षमता 9458 मेगावाट हो गयी है।

फीडर सेपरेशन की बड़ी परियोजना पर तेजी से काम हो रहा है। अगले साल के अंत तक ग्रामीण परिवारों को 24 तथा खेती के लिये 8 घंटे बिजली मिलने लगेगी।

मैं मानता हूँ कि भौतिक विकास ही सब कुछ नहीं होता। लोगों के शैक्षणिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास में ही समाज की पूर्णता है। प्रदेश में बीते 9 वर्ष में प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक भरपूर ध्यान दिया गया। प्रदेश में पहली से बारहवीं कक्षा तक बच्चों को पढ़ाई की लगभग सारी सुविधाएँ मुफ्त उपलब्ध हैं।

तकनीकी और उच्च शिक्षा का भी प्रदेश में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों में तेजी से प्रसार हुआ है। उद्योगों की प्रशिक्षित जनशक्ति की माँग की पूर्ति के लिये महत्वाकांक्षी कौशल विकास कार्यक्रम चलाया जा रहा है। नयी आईटीआई और कौशल विकास केन्द्र खोले जा रहे हैं और उनके पाठ्यक्रमों में जरूरत के मुताबिक बदलाव किये जा रहे हैं।

आज प्रदेश के युवाओं की रोजगार पाने की योग्यता लगातार बढ़ रही है और वे देश-दुनिया में मध्यप्रदेश का नाम ऊँचा कर रहे हैं। महिलाओं के सशक्तीकरण, उनके हितों के संरक्षण तथा उनके प्रति समाज के दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव लाने में भी प्रदेश ने पूरे देश को राह दिखाई है।

मध्यप्रदेश के विभिन्न अंचलों में रहने वाले लोगों में सांस्कृतिक एकीकरण तथा ''मध्यप्रदेशियत'' का भाव जगाने में हम सफल हो रहे हैं। इसमें ''आओ बनाएँ अपना मध्यप्रदेश'' अभियान तथा ''मध्यप्रदेश गान'' की बड़ी भूमिका रही है। आज प्रदेशवासियों में न केवल प्रदेश पर गर्व का भाव बढ़ा है, बल्कि वे पूरे मनोयोग और निष्ठा से प्रदेश को उन्नति की ओर तीव्रतम गति से ले जा रहे हैं।

शिक्षा और जागरूकता बढ़ने के साथ-साथ शासन स्तर पर किये गये प्रयासों से अब महिलाओं, अनुसूचित जाति, जनजाति सहित अन्य कमजोर वर्गों के प्रति होने वाले अपराधों में उल्लेखनीय कमी आयी है। पिछड़े वर्गों, अनुसूचित जातियों और जनजातियों की नयी पीढ़ी शिक्षा में तेजी से आगे बढ़ रही है, जिससे इन वर्गों की सामाजिक-आर्थिक हैसियत में फर्क आने लगा है। मध्यप्रदेश में आज अल्पसंख्यकों में विश्वास का वातावरण है। वे विकास के सभी क्षेत्रों में मुख्यधारा में हैं।

मध्यप्रदेश के भौतिक और सामाजिक विकास में सुशासन का महत्वपूर्ण योगदान है। प्रदेश में सुशासन के नवाचार किये गये हैं और शासन-प्रशासन में सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग से इसे अधिक प्रभावी बनाया गया है। लोगों को शासकीय सेवाएँ समय पर और आसानी से उपलब्ध करवाने के लिये लोकसेवा गारंटी जैसा अद्‌भुत कानून लागू किया गया है।

इस कानून को संयुक्त राष्ट्र संघ का पुरस्कार भी मिला है। विकास के श्रेष्ठ कार्यों तथा महिला सशक्तिकरण की दिशा में हमारे कामों की गूँज विदेशों में भी पहुँची है। यह बताने के लिये मुझे विश्व बैंक तथा मिशिगन यूनिवर्सिटी में आमंत्रित किया गया।

विकास की एक बड़ी शर्त शांति-व्यवस्था है। इस मामले में हमारा प्रदेश बहुत अच्छी स्थिति में है। प्रदेश में दस्यु समस्या का उन्मूलन हो चुका है। ''सिमी'' के नेटवर्क को ध्वस्त कर दिया गया है। साथ ही माओवाद पर प्रभावी अंकुश लगातार बना हुआ है। हम सर्वधर्म समभाव को साकार करने में सफल रहे हैं। मुख्यमंत्री निवास में सब धर्म के पर्व मनाये जाते हैं।

अब मध्यप्रदेश न ''बीमारू'' है न पिछड़ा, न मात्र संभावनाओं का प्रदेश है, न पिंजरे में बंद शेर। अब अपनी समस्त प्राकृतिक सम्पदा का समग्र विकास में उपयोग करता हुआ यह है - उदीयमान मध्यप्रदेश। ऐसा प्रदेश जिसमें सरकार की चिन्ता से कोई भूला-बिसरा नहीं है। कामकाजी बहनें हों, नि:शक्तजन हों या वृद्धजन, हम्माल हों या श्रमिक-मछुआ भाई।

समृद्ध और विकसित मध्यप्रदेश बनाने की मेरी कल्पना को मूर्त रूप देने के लिये मैं आज सभी का आह्वान करता हूँ।

यह समय प्रदेश के विकास और आम जनता के कल्याण के यज्ञ में खुद की आहुति देने का है। मुझे उम्मीद है कि हम अधिकारों के प्रति जितना संवेदनशील रहते हैं, प्रदेश के प्रति कर्त्तव्यों को पूरा करने में उससे ज्यादा सजग होंगे।